स्पर्श (भाग-2)
(LITERATURE)

मनुष्यता

–मैथिलीशरण गुप्त

काव्यांश

'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि ने मनुष्य जीवन का अर्थ, महत्व और उसे सार्थक करने का उपाय बताया है। अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में चेतना शक्ति अधिक प्रबल होती है। वह अपना ही नहीं औरों के हिताहित का ख्याल रखने में, सभी के लिए कुछ कर सकने में भी सक्षम होता है। केवल अपने लिए सोचना, अपना पेट भरना पशुओं का जीवन होता है, किंतु मनुष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए। मनुष्य कहलाने के लिए सब के हित में सोचना और कार्य करना आवश्यक है।

Topic Notes

- पाठ का सार
- पाठ में निहित केंद्रीय भाव

पाठ का सार

काव्यांश — 1

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

मर्त्य- मरणशील, *सुमृत्यु*- महान या अच्छी मृत्यु, *वृथा*- व्यर्थ / बेकार, *पशु प्रवृत्ति*- पशु जैसा स्वभाव, *चरना*- खाना / पेट भरना

व्याख्या

कवि का कहना है कि इस बात को समझना और स्वीकारना आवश्यक है कि मनुष्य शरीर नश्वर है। धरती पर जन्मा हर मनुष्य मरणशील है। सभी के जीवन का अंत निश्चित है। इसलिए हमें मृत्यु का भय अपने मन से सहज निकाल देना चाहिए। किंतु ऐसी मृत्यु की कामना सदैव करनी चाहिए जिसके बाद भी सब हमें याद करें अर्थात् अपने जीवन को व्यर्थ न गँवाकर परहित के मार्ग पर निरंतर अग्रसर रहना चाहिए। तभी मरकर भी हम अमर हो पाएँगे। मरण-उपरांत भी लोग हमारे सुकृत्यों का स्मरण करेंगे। उनकी स्मृतियों में हम सजीव हो उठेंगे। इसलिए महान मृत्यु को प्राप्त करो। यदि सुमृत्यु या महान मृत्यु प्राप्त नहीं हुई तो हमारा मरना और जीना दोनों ही व्यर्थ हैं। यदि हमारा जीवन व्यर्थ बीतता जाता है, किसी के काम नहीं आता, तो ऐसा जीवन जीना व्यर्थ है और उसके बाद मिलने वाली मृत्यु भी व्यर्थ ही है। उसके जीवन का कभी अंत नहीं होता जो केवल अपने लिए नहीं जीता अर्थात् सभी के लिए जीने वाला, सभी के हित में सोचने और कार्य करने वाला कभी मरता नहीं है। यह तो पशुओं का स्वभाव होता है कि केवल अपना पेट भरने के लिए ही कार्य करें। पशु चरागाह में जाते हैं और अपने-अपने हिस्से का भोजन करके लौट आते हैं। अपना पेट भरना और सोना; यही उनका जीवन होता है। किंतु मनुष्य का जीवन ऐसे व्यतीत नहीं होना चाहिए। मनुष्य तो वही है जो मनुष्य के लिए या समस्त जीव-जगत के लिए कार्य करे, सभी के हित के बारे में सोचे ।

शिल्प सौंदर्य

(1) सरल, सहज भाषा में भावाभिव्यक्ति की गई है।
(2) बोलचाल की भाषा का प्रयोग है।
(3) 'आप-आप' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(4) 'जो-जिया' में अनुप्रास अलंकार है।
(5) 'सुमृत्यु', 'पशु-प्रवृत्ति' सामासिक शब्द हैं।

भाव सौंदर्य

मृत्यु को एक सच्चाई बताया गया है और उसका भय अपने हृदय से निकाल देने पर बल दिया गया है।

उदाहरण 1. **कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?**
[CBSE 2011, NCERT]

उत्तर : सुमृत्यु का अर्थ है महान या अच्छी मृत्यु। कवि अनुसार जब मनुष्य जीवन भर परोपकार का निर्वाह करता है, सबके काम आता है, सबकी मदद करने के लिए तत्पर रहता है, कभी किसी का दिल न दुखाकर सबके कष्टों को दूर करने का प्रयत्न करता है तभी उसका जीवन सार्थक बनता है। उसकी मृत्यु पश्चात भी लोग उसके परोपकारी स्वभाव का, सुकृत्यों का स्मरण करते हैं। ऐसे में वह उनकी स्मृतियों में सजीव हो उठता है। वह मरकर भी अमर हो जाता है। इसे ही कवि ने सुमृत्यु कहा है।

काव्यांश — 2

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म-भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

उदार- बड़े दिलवाला, *बखान*- वर्णन, *धरा*- धरती, *कृतार्थ*- उपकार, *कीर्ति*- यशगान, *कूजती*- गूँजती है, *समस्त*- सारी, *अखंड*- कभी न टूटने वाला, *आत्म-भाव*- अपनेपन की भावना, *असीम विश्व*- सारा संसार।

व्याख्या

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने उदार व्यक्ति की पहचान बताई है और यह भी स्पष्ट किया है कि उसे कैसे याद रखा जाता है। कवि कहते हैं कि जो उदार होता है, जिसका हृदय बहुत बड़ा होता है, उसका बखान पुस्तकें सदियों तक करती हैं। उदार लोगों का तो धरा भी उपकार मानती है कि उन्होंने उसकी गोद में जन्म लिया। उदार लोगों की कीर्ति, उनका यशगान हमेशा गूँजता रहता है और उदार लोगों को समस्त सृष्टि याद करती है। कवि के अनुसार जो संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँधने का काम करता है, संपूर्ण विश्व में ऐसे अपनेपन का भाव पिरो देता है, जो अखंड होता है अर्थात् जो कभी टूटता नहीं है, वही उदार कहलाता है। मनुष्य कहलाने योग्य ही वह है जो मानव मात्र के लिए, संपूर्ण जगत के लिए जीता है और अपना जीवन कुर्बान कर देता है।

शिल्प सौंदर्य

(1) प्रभावशाली, आकर्षक, ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग है।

(2) 'उसी उदार', 'सदा सजीव', 'समस्त सृष्टि', 'अखंड आत्म', में अनुप्रास अलंकार का उत्तम प्रयोग है।

(3) 'धरा कृतार्थ भाव मानती' में मानवीकरण अलंकार है।

भाव सौंदर्य

उदार व्यक्तियों की पहचान और अमरता का वर्णन करते हुए हमें उदार हृदय वाला व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित किया गया है।

उदाहरण 2. **उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?** **[CBSE 2012, 11, NCERT]**

उत्तर : जिस व्यक्ति का दिल बड़ा होता है, जो सबकी मदद करने के लिए तैयार रहता है, वह उदार कहलाता है। ऐसे लोगों की गाथा पुस्तकों में वर्णित होती है, धरती भी उनका उपकार मानती है, सारी सृष्टि उनको पूजती है और उनका यशगान सदा किया जाता है। उदार व्यक्ति की यही पहचान है कि वह समस्त सृष्टि को एक सूत्र में बाँधने का काम करता है। वह सबको समान दृष्टि से देखता है और सभी में अपनेपन का भाव भरने का प्रयत्न करता है।

काव्यांश — 3

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीज ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे ?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

क्षुधार्त- भूख से व्याकुल, *करस्थ*- हाथ में लिया हुआ, *परार्थ*- दूसरे के हित में, *अस्थिजाल*- हड्डियों का ढाँचा, *स्वमांस*- अपने शरीर का मांस, *सहर्ष*- खुशी-खुशी, *शरीर- चर्म*-शरीर की चमड़ी, *अनित्य*- नाशवान, *अनादि*- हमेशा रहने वाला।

व्याख्या

हमें दान की प्रेरणा देने के लिए विभिन्न उदाहरण देते हुए कवि कह रहे हैं कि राजा रंतिदेव ने लंबे उपवास के बाद भी अपने हाथों में लिया हुआ भोजन का थाल एक क्षुधा से व्याकुल व्यक्ति को दान दे दिया। दधीचि ऋषि ने देवताओं के हित में, धर्म की रक्षा के लिए अपनी अस्थियाँ तक दान कर दीं। उशीनर नाम के राजा ने एक पक्षी की जान बचाने के लिए अपना मांस दान कर दिया और वीर कर्ण ने खुशी-खुशी उस सुरक्षा कवच का दान कर दिया जो उसे जन्म से ही मिला हुआ था। यह देह तो नश्वर है, अमर तत्व हमारी आत्मा है। तो अपनी आत्मा को महान बनाने के लिए हम इस देह के परहित प्रयोग में संकोच क्यों करें अर्थात् जो दानवीर होते हैं वह निसंकोच दूसरों के हित के लिए अपना तन-मन न्यौछावर करने को हमेशा तैयार रहते हैं। सच्चा मनुष्य वही है जो जीव और जगत के लिए अपना जीवन सहर्ष बलिदान कर दे।

शिल्प सौंदर्य

(1) सरल, सहज, प्रभावशाली भाषा का प्रयोग है। चर्म, क्षितीश, करस्थ जैसे तत्सम शब्दों के प्रयोग से भाषा आकर्षक बन गई है।

(2) काव्यांश दृष्टांत अलंकार का सुंदर उदाहरण है।

(3) भाषा ओजपूर्ण और प्रभावशील है।

भाव सौंदर्य

भारतीय संस्कृति-सभ्यता विश्व के लिए एक उदाहरण है। भारतीय मनीषियों ने त्याग, तपस्या और परहित का ऐसा मार्ग दिखाया है, जो ईर्ष्या, लोभ और क्रोध से तपती जलती धरती को सच्चे सुख, आनंद और शीतलता की राह दिखा सकता है। प्रस्तुत पद में गुप्त जी ने ऐसे ही कई महापुरुषों—रंतिदेव, दधीचि, कर्ण, बुद्ध आदि की चर्चा की है, जिन्होंने भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने में अपूर्व योगदान दिया है।

उदाहरण 3. **कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?** **[NCERT]**

उत्तर : कवि ने अनेक दानवीरों के उदाहरण देकर हमें परोपकार करने की प्रेरणा दी है। दधीचि ऋषि ने देवताओं के हित में अपनी अस्थियाँ तक दान कर दी थीं, दानवीर कर्ण ने अपना सुरक्षा कवच, राजा रंतिदेव ने भोजन का थाल, राजा क्षितिश ने अपने शरीर का मांस खुशी-खुशी दान किया था क्योंकि शरीर नश्वर है। उसके परहित इस्तेमाल में हमें संकोच नहीं करना चाहिए।

काव्यांश — 4

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही ।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

शब्दार्थ

सहानुभूति- दूसरों के दुख को समझना, *महाविभूति*- बहुत बड़ा गुण, *वशीकृता*- बस में हो जाना, *मही*- धरती, *विरुद्धवाद*- विरोध, *प्रवाह*- बहाव, *विनीत लोकवर्ग*- सभ्य समाज।

व्याख्या

कवि का मानना है कि हमारे अंदर सहानुभूति का गुण होना चाहिए, यह एक बहुत बड़ा गुण है। इसकी प्रेरणा हमें मही अर्थात् धरती से मिलती है। वह इतनी विशाल होते हुए भी सदैव वशीकृता बनी रहती है अर्थात् दूसरों के वश में रहती है। हम अपनी अनंत जरूरतों को पूरा करने के लिए उसका मनचाहा प्रयोग करते रहते हैं और वह चुपचाप सब कुछ सहती है। हमारी जरूरतों को समझती है और पूरा करती है। इसके अतिरिक्त महात्मा बुद्ध का उदाहरण देकर

कवि ने हमें परोपकार की सीख दी है। कवि कहते हैं कि तत्कालीन समाज ने महात्मा बुद्ध के उपदेशों का बहुत विरोध किया किंतु वह सारा विरोध उनकी दया और करुणा के प्रवाह में बह गया अर्थात् सारा समाज उनके विचारों के समक्ष नतमस्तक हो गया। वास्तव में उदार वही है जो परोपकार करता है, दूसरों के हित में सोचता और कार्य करता है। मनुष्य होने का अर्थ ही यह है कि सबके हित में अपना जीवन व्यतीत कर दें।

शिल्प सौंदर्य

(1) प्रश्न शैली से भाव अभिव्यक्ति में सौंदर्य आ गया है।

(2) सरल, सुबोध प्रभावशाली भाषा का प्रयोग है। भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है।

(3) 'महाविभूति', 'विरुद्धवाद', 'दया-प्रवाह' सामासिक शब्द हैं।

(4) तुकांत शब्दों का प्रयोग है।

भाव सौंदर्य

सहानुभूति को एक महत्वपूर्ण मानवीय गुण बताया गया है। धरती और महात्मा बुद्ध से प्रेरणा लेते हुए दया-करुणा को अपनाने पर बल दिया गया है।

काव्यांश — 5

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

शब्दार्थ

मदांध- मद में अंधा, *तुच्छ*- छोटा, *वित्त*- धन, *सनाथ*- जिसके सिर पर किसी का हाथ हो, *चित्त*- मन, *त्रिलोकनाथ*- तीनों लोकों के स्वामी अर्थात् ईश्वर, *अतीव*- अत्यधिक, *अधीर*- धैर्य खो देना।

व्याख्या

कवि किसी भी कारण घमंड न करने की सीख देते हुए कह रहे हैं कि हमें भूलकर भी धन जैसी छोटी चीज़ के नशे में अंधा नहीं होना चाहिए। यदि हम सनाथ हैं, हमारे सिर पर किसी का हाथ है, तो इस बात का मन में अहंकार पैदा होना अनुचित है क्योंकि ईश्वर का सहारा सभी को प्राप्त है। उसके होते हुए कोई भी अकेला या बेसहारा है ही नहीं। प्रभु के विशाल हाथ, उनकी सहायता सभी के लिए पर्याप्त है। उनके होते हुए भी यदि कोई अपने आप को अकेला या बेसहारा महसूस करके अपना धैर्य खो देता है तो वह अत्यधिक भाग्यहीन है।

शिल्प सौंदर्य

(1) प्रभावशाली, ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग है।

(2) 'दयालु दीनबंधु' में अनुप्रास अलंकार है। 'त्रिलोकनाथ', 'भाग्यहीन' – सामासिक शब्द हैं।

(3) प्रश्न शैली ने भाषा को प्रभावशाली बना दिया है।

(4) तत्सम शब्दों से युक्त संस्कृतनिष्ठ भाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है।

भाव सौंदर्य

गर्व रहित जीवन जीने के लिए प्रेरित किया गया है। ईश्वर में आस्था व्यक्त करते हुए सभी को धैर्य और विश्वास बनाए रखने को कहा गया है।

उदाहरण 4. **कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?**

[CBSE 2012, 11, NCERT]

उत्तर : 'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में' कहकर कवि ने स्पष्ट किया है कि धन जैसी तुच्छ चीज पर कभी भूलकर भी घमंड नहीं करना चाहिए। सदैव अहंकार रहित जीवन जीने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए। यदि हम सनाथ हैं, हमें अपनों का सहारा मिला हुआ है, तो भी अभिमान करने का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि संसार में आनाथ तो कोई है ही नहीं। तीनों लोकों के स्वामी अर्थात् ईश्वर सभी के साथ हैं और उनके होते हुए तो कोई भी अकेला या बेसहारा हो ही नहीं सकता।

काव्यांश — 6

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

शब्दार्थ

अनंत- जिसका कोई अंत न हो, *समक्ष*- सामने, *स्वबाहु*- अपनी बाहें, *परस्परावलंब*- एक दूसरे के सहारे से, *अमर्त्य*- *अंक*-कभी न मिटने वाली गोद / ईश्वर की गोद, *अपंक*- निर्दोष, *सरे*- पूर्ण हो।

व्याख्या

अंतरिक्ष अनंत है, इसका कोई अंत नहीं है और असीम अंतरिक्ष में अनगिनत देव (वायु देव, अग्नि देव आदि-शक्तियाँ) हमारी सहायता के लिए हर समय मौजूद हैं। वे हमारे समक्ष अपनी बड़ी-बड़ी बाहें फैलाएँ मदद देने के लिए तैयार हैं। ज़रूरत इस बात की है कि हम एक दूसरे का सहारा बनें और आगे बढ़ें अर्थात् हमें ही एक दूसरे के लिए ताकत बनना है और अमर गोद में समाने के लिए, ईश्वर से एकाकार होने के लिए हर समय अपंक अर्थात् दोषमुक्त रहना है। ऐसा जीवन नहीं जीना है कि हमारे किसी प्रयास से केवल हमारा ही भला हो न की किसी ओर का। हमारा निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर सभी के काम आना ज़रूरी है क्योंकि सच्चा मनुष्य वही है जो सबके काम आए।

शिल्प सौंदर्य

(1) प्रसंगानुसार तत्सम शब्दों का पर्याप्त प्रयोग किया गया है।

(2) 'अनंत अंतरिक्ष', 'अभी अमर्त्य' में अनुप्रास अलंकार है।

(3) 'बड़े-बड़े' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(4) उपदेशात्मक शैली का प्रयोग है।

(5) तुकांत शब्दों का प्रयोग है।

भाव सौंदर्य

ईश्वर के प्रति विश्वास व्यक्त करते हुए हमें निष्कलंक और निर्दोष बने रहने की प्रेरणा दी गई है।

उदाहरण 5. **कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?** **[CBSE 2014, 11, NCERT]**

उत्तर : कवि का मानना है कि हम सब एक हैं। सब उसी परमपिता परमेश्वर की ही संतानें हैं। हमारा जीवन बाहर से भले ही अलग-अलग हो किंतु अंदर से सभी की आत्मा एक है। इस दृष्टि से हम सब एक दूसरे के भाई-बंधु हैं अत: हमें एक होकर, मेल-मिलाप के साथ जीवन जीना चाहिए। हम एक-दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ेंगे तभी समाज, देश और पूरा विश्व समान रूप से प्रगति कर सकेगा। एक-दूसरे के रूप में हमें ईश्वर का ही सहारा मिलता है क्योंकि वह ईश्वर सबके अंदर विद्यमान है। हर कोई एक-दूसरे का सहारा बनेगा तो कोई भी बेसहारा नहीं रहेगा।

काव्यांश — 7

'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

शब्दार्थ

मात्र- केवल, *विवेक*- समझदारी की बात, *पुराणपुरुष*- पुराणों में वर्णित पुरुष, *स्वयंभू*- स्वयं भू की रचना की है जिसने, *बाह्य*- बाहर से, *अंतरैक्य*- अंदर की एकता, *प्रमाणभूत*- प्रमाण / साक्षी, *अनर्थ*- बहुत भारी गलती, *बंधु*- साथी, *व्यथा*- दुख।

व्याख्या

यह एक समझने की बात है कि मनुष्य आपस में केवल बंधु और साथी ही हैं। किसी भी स्थिति में वह एक-दूसरे के शत्रु नहीं हो सकते। उनकी एकता का प्रमाण वेदों में मौजूद है। पुराणों में जिस परमपिता परमात्मा का वर्णन किया गया है वह एक ही है और हम सब उसी की संतानें हैं। इस दृष्टि से हम सभी परस्पर भाई-बंधु हैं। बाहर से देखने में अवश्य ही सबका जीवन अलग-अलग है किंतु अंदर से सब एक हैं। एक होते हुए भी यदि हम अलग- अलग तरह का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, कोई सुखी है कोई दुखी, तो यह हमारे ही कर्मों का परिणाम है। जैसा कर्म करते हैं उसी के अनुसार हमें भौतिक संसार में जीवन जीने को मिलता है। वास्तव में सभी के अंदर विद्यमान आत्मा का स्वरूप, ईश्वरांश एक ही है। यह जानते हुए भी अगर एक व्यक्ति दूसरे की सहायता नहीं करता तो उसका जीवन व्यर्थ है।

शिल्प सौंदर्य

(1) प्रभावशाली, सहज, सुबोध भाषा का प्रयोग है।

(2) 'मनुष्य मात्र', 'पिता प्रसिद्ध' में अनुप्रास अलंकार है।

(3) 'पुराणपुरुष', 'प्रमाणभूत' - सामासिक शब्द हैं।

(4) पूरे काव्यांश में लयात्मकता है।

भाव सौंदर्य

प्राणीमात्र की एकता के प्रति विश्वास व्यक्त किया गया है। सभी को एक-दूसरे की मदद के लिए आगे आने की प्रेरणा दी गई है।

उदाहरण 6. **'मनुष्य मात्र बंधु है', से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।** **[CBSE 2012, 11, NCERT]**

उत्तर : कवि के अनुसार हम सब परमपिता परमेश्वर की ही संतानें हैं। इसी आधार पर कवि मानते हैं कि हम सभी परस्पर भाई-बंधु हैं किसी भी दृष्टि में हम एक-दूसरे के शत्रु नहीं हो सकते। हमें परस्पर मित्रता का भाव रखना चाहिए और एक-दूसरे को कष्ट देने का विचार भी मन में नहीं लाना चाहिए। अपितु सभी के कष्टों को दूर करना, सभी की मदद करना हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

काव्यांश — 8

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ , बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

शब्दार्थ

अभीष्ट- अपनी इच्छा से चुना हुआ, *सहर्ष*- खुशी-खुशी, *विघ्न*- बाधाएँ, *धकेलना*- दूर करना, *हेलमेल*- मेलजोल, *अतर्क*- बिना तर्क या बहस के, *सतर्क*- सावधान, *पंथ*- मार्ग / राह, *समर्थ*- अर्थपूर्ण, *तारता*- उद्धार करता हुआ।

व्याख्या

कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' ने पहले मनुष्य जीवन का अर्थ बताया फिर उसे सफल बनाने के उपाय बताए हैं। इसके पश्चात वह कह रहे हैं कि अब तुम अपनी इच्छा से एक उचित मार्ग का चुनाव करो और उस पर हँसते-हँसते आगे बढ़ो। ऐसा नहीं है कि इस मार्ग में कोई मुश्किलें या बाधाएँ नहीं आएँगी। तुमने उन विघ्न-बाधाओं को धकेलते हुए आगे बढ़ते जाना है। इस बात का ध्यान रखना है कि मेलजोल कम न हो और भिन्नताएँ बढ़ें नहीं अर्थात् जीवन

मार्ग पर आगे बढ़ते हुए आपसी मनमुटाव दूर होना चाहिए और प्रेम भाव बढ़ते जाना चाहिए। हम सबने एक ऐसी राह के सतर्क राही बनना है जिस पर कोई मतभेद या विचारों का टकराव न हो। मनुष्य जीवन की सफलता ही इसमें है कि हम दूसरों का उद्धार करते हुए अपना उद्धार करें और मनुष्य कहलाने योग्य ही वह है जो सबके हित के बारे में सोचे और कार्य करे।

शिल्प सौंदर्य

(1) सहज, सरल, प्रभावशाली भाषा सुंदर भावाभिव्यक्ति में पूरी तरह सक्षम है।

(2) तत्सम शब्दों का समुचित प्रयोग किया गया है।

(3) 'विपत्ति विघ्न' में अनुप्रास अलंकार है।

(4) तुकांत शब्दों का प्रयोग है।

भाव सौंदर्य

मनुष्य जीवन को सफल बनाने का मार्ग बताने के उपरांत एक उचित मार्ग का चुनाव करके, सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने की सीख दी गई है।

उदाहरण 7. **व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।**

[CBSE 2011, NCERT]

उत्तर :कवि के अनुसार मनुष्य रूप में जन्म लेने मात्र से कोई मनुष्य नहीं कहलाता। मनुष्य जीवन को सफल बनाने के लिए हमारे भीतर दया, करुणा, सहानुभूति जैसे गुण होने ही चाहिए। हमें विवेकपूर्वक अपने जीवन के लिए एक उचित मार्ग का चुनाव करना चाहिए और उस पर सतर्क होकर आगे बढ़ना चाहिए कि आपस में किसी तरह का मनमुटाव पैदा न हो और निरंतर मेलजोल बढ़ता रहे। राह में जो भी विघ्न-बाधाएँ आएँ, उन्हें दूर करने का साहस भी हमारे अंदर होना चाहिए।

उदाहरण 8. **काव्यांश पर आधारित प्रश्न :**

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(क) कवि ने किस बात का भय अपने हृदय से निकाल देने को कहा है?
- **(i) मरने का**
- **(ii) जीने का**
- **(iii) पशुओं का**
- **(iv) धन-संपत्ति खो जाने का**

(ख) कवि ने सुमृत्यु किसे कहा है ?
- **(i) समय से पहले होने वाली मृत्यु**
- **(ii) समय पर होने वाली मृत्यु**
- **(iii) स्वार्थी जीवन जीकर मिलने वाली मृत्यु**
- **(iv) सबके लिए जीकर मिलने वाली मृत्यु**

(ग) इस काव्यांश का संदेश है कि—
- **(i) हमें सुमृत्यु को प्राप्त नहीं करना चाहिए**
- **(ii) हमें घमंड नहीं करना चाहिए**
- **(iii) हमें सबको समान समझना चाहिए**
- **(iv) अपने जीवन और मृत्यु को महान बनाना चाहिए**

(घ) कौन अमर हो जाता है ?

उत्तर :**(क)** *(i) मरने का*

व्याख्यात्मक हल : मृत्यु तो निश्चित है। वह जीवन का एकमात्र सत्य है।

(ख) *(iv) सबके लिए जीकर मिलने वाली मृत्यु*

व्याख्यात्मक हल : सबके लिए जीना एक महान जीवन होता है और महान जीवन के उपरांत मिलने वाली मृत्यु ही सुमृत्यु होती है।

(ग) *(iv) अपने जीवन और मृत्यु को महान बनाना चाहिए*

(घ) जो परोपकार या परहित के उद्देश्य से युक्त जीवन जीता है वह मरकर भी अमर हो जाता है। मरण-उपरांत भी लोग उसके सुकृत्यों का स्मरण करते हैं । वह उनकी स्मृतियों में सदा जीवंत बना रहता है।

पाठ में निहित केंद्रीय भाव

कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' ने 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से मनुष्य जीवन का महत्व, उसका सदुपयोग करने के उपाय तथा उन मानवीय गुणों की चर्चा की है जो एक मनुष्य में होने आवश्यक हैं। कवि के अनुसार सबकी मदद करते हुए हमें एक महान जीवन जीना चाहिए। तभी हम सुमृत्यु को प्राप्त कर सकते हैं। हमें उदार हृदय रखना चाहिए जिसमें सभी के सुख-दुख के लिए स्थान हो। किसी भी प्रकार का दान देने में अर्थात् सहायता करने में संकोच नहीं करना चाहिए। मनुष्य के अंदर सहानुभूति, दया और करुणा का जो भाव है वही उसे अन्य प्राणियों से अलग और श्रेष्ठ बनाता है। परमपिता परमात्मा सब जगह और सबके लिए मौजूद हैं। उनके होते हुए कोई भी अकेला या बेसहारा नहीं हो सकता। यह विश्वास रखते हुए हमें एक-दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ना चाहिए। समझदारी और सूझबूझ से एक उचित मार्ग का चुनाव करके जीवन-पथ पर मेलजोल के साथ आगे बढ़ना चाहिए। सभी के हितचिंतन में ही हमारा हित है क्योंकि मनुष्य ही वह है जो जीवनपर्यंत प्राणीमात्र केलिए अपना जीवन व्यतीत करे।

वस्तुपरक प्रश्न

[1 अंक]

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

(क) कवि ने कैसे मार्ग पर आगे बढ़ने की बात कही है?
- (i) अपनी इच्छा से चुना हुआ मार्ग
- (ii) भाग्य से मिला हुआ मार्ग
- (iii) सुख-सुविधाओं से भरा हुआ मार्ग
- (iv) चुनौतियों से भरा हुआ मार्ग

(ख) जीवन मार्ग पर आगे बढ़ते हुए हमें किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
- (i) आपसी मेलजोल न बढ़े
- (ii) भिन्नताएँ न घटें
- (iii) मनमुटाव होता रहे
- (iv) मेलजोल बढ़ता रहे

(ग) इस काव्यांश का संदेश क्या नहीं है ?
- (i) विघ्न-बाधाओं से घबराना नहीं चाहिए
- (ii) सचेत होकर आगे बढ़ना चाहिए
- (iii) अपने हित को सर्वोपरि रखना चाहिए
- (iv) द्वेष भाव बढ़ना नहीं चाहिए

(घ) @इस काव्यांश के कवि और कविता का नाम क्या है?
- (i) मनुष्यता- सुमित्रानंदन पंत
- (ii) कर चले हम फ़िदा - सुमित्रानंदन पंत
- (iii) मनुष्यता - मैथिलीशरण गुप्त
- (iv) मनुष्यता - रवींद्रनाथ ठाकुर

उत्तर : (क) *(i) अपनी इच्छा से चुना हुआ मार्ग*

व्याख्यात्मक हल : कवि ने हमें सच्चा मनुष्य बनने का उपाय बताया है और अब वे चाहते हैं कि हम अपनी इच्छा से एक उचित मार्ग का चुनाव करें।

(ख) *(iv) मेलजोल बढ़ता रहे*

व्याख्यात्मक हल : हमारा जीवन सरल और सफल तभी बनेगा, जब हमारा आपसी मेलजोल बढ़ता रहेगा।

(ग) *(iii) अपने हित को सर्वोपरि रखना चाहिए*

व्याख्यात्मक हल : सच्चा मनुष्य कभी भी अपने हित को सर्वोपरि नहीं रख सकता।

2. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही ।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

(क) धरती से कौन-सा गुण लेने की बात कही गई है?
- (i) गुरुत्वाकर्षण का गुण
- (ii) सहानुभूति का गुण
- (iii) स्वार्थपरकता का गुण
- (iv) स्वयं को महान सिद्ध करने का गुण

(ख) दया के प्रवाह में क्या बह गया ?
- (i) महात्मा बुद्ध के संदेश
- (ii) दया और करुणा के भाव
- (iii) महात्मा बुद्ध के अनुयायी
- (iv) महात्मा बुद्ध का विरोध

(ग) इस काव्यांश में किसका महत्व बताया गया है?
- (i) धरती का
- (ii) महात्मा बुद्ध का
- (iii) परोपकार के भाव का
- (iv) मनुष्य जीवन का

(घ) विरुद्धवाद का तात्पर्य क्या है?
- (i) विरोधी
- (ii) सहानुभूति का गुण
- (iii) महात्मा बुद्ध का विरोध
- (iv) परोपकार के भाव का

उत्तर : (क) *(ii) सहानुभूति का गुण*

व्याख्यात्मक हल : धरती इतनी विशाल होते हुए भी सबकी जरूरतें पूरी करने के लिए वशीकृता बनी हुई है। उससे हमें सहानुभूति की सीख लेनी चाहिए।

(ख) *(iv) महात्मा बुद्ध का विरोध*

(ग) *(iii) परोपकार के भाव का*

व्याख्यात्मक हल : परोपकार का भाव ही है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है।

(घ) *(iii) महात्मा बुद्ध का विरोध*

व्याख्यात्मक हल : उस समय की सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ महात्मा बुद्ध ने दया और परोपकार का संदेश दिया था जिसका खूब विरोध हुआ था। उसे ही विरुद्धवाद कहा गया है।

3. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(क) कवि ने किसे उदार माना है?

(i) जो समस्त विश्व को ज्ञान देता है
(ii) जो समस्त विश्व में भ्रमण करता है
(iii) जो समस्त विश्व को एक सूत्र में बाँध देता है
(iv) जो असीम शक्तिशाली होता है

(ख) काव्यांश अनुसार धरा किसे जन्म देकर धन्य हो जाती है?

(i) सरस्वती जिसका वर्णन करती है
(ii) जो पूरे विश्व में अपनापन व्याप्त कर देता है
(iii) चारों ओर जिसकी कीर्ति गूँजती है
(iv) जिसे समस्त सृष्टि पूजती है

(ग) इस काव्यांश के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि—

(i) हमें संपूर्ण विश्व के लिए आत्मीयता का भाव रखना चाहिए
(ii) हमें प्रसिद्ध होने के लिए कार्य करना चाहिए
(iii) हमें स्वार्थी जीवन जीना चाहिए
(iv) हमें सृष्टि की पूजा करनी चाहिए

(घ) काव्यांश अनुसार उदार व्यक्ति की पूजा कहाँ होती है?

(i) पुस्तकों में	**(ii) संपूर्ण सृष्टि में**
(iii) गीतों में	**(iv) इतिहास के पन्नों में**

उत्तर : (क) *(iii) जो समस्त विश्व को एक सूत्र में बाँध देता है*

व्याख्यात्मक हल : समस्त मानव जाति को एक सूत्र में बाँधना ही सबसे उदार कार्य है।

(ख) *(ii) जो पूरे विश्व में अपनापन व्याप्त कर देता है।*

व्याख्यात्मक हल : धरती का वह अंश या देश ऐसे उदार लोगों की वजह से ही जाना जाता है।

(घ) *(ii) संपूर्ण सृष्टि में*

4. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीज ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे ?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(क) दधीचि ऋषि ने क्या दान किया था?

(i) भोजन का थाल
(ii) शरीर का मांस
(iii) अपना अस्थि जाल
(iv) अपना कवच

(ख) करण ने अपना शरीर चर्म कैसे दान किया था?

(i) घबराते हुए	**(ii) हँसते हुए**
(iii) रोते हुए	**(iv) काँपते हुए**

(ग) नश्वर कौन है?

(i) हमारी आत्मा	**(ii) हमारा शरीर**
(iii) हमारे विचार	**(iv) हमारे कर्म**

(घ) प्रस्तुत काव्यांश का संदेश है कि हमें—

(i) सबके प्रति दया भाव रखना चाहिए
(ii) अपने शरीर को सुंदर बनाना चाहिए
(iii) बिना सोचे-समझे दान नहीं करना चाहिए
(iv) दान करने में संकोच नहीं करना चाहिए

उत्तर : (क) *(iii) अपना अस्थिजाल*

(ख) *(ii) हँसते हुए*

(ग) *(ii) हमारा शरीर*

व्याख्यात्मक हल : हमारा शरीर हर दिन परिवर्तित होता है और एक न एक दिन इसका अंत निश्चित है। इसलिए यह नश्वर अर्थात् नाशवान है।

(घ) *(iv) दान करने में संकोच नहीं करना चाहिए*

व्याख्यात्मक हल : दान करने से वह आत्मा शुद्ध होती है, जो कि शाश्वत है। शरीर, जिसे नष्ट होना ही है, उसका दान करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

5. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

(क) परस्परावलंब का अर्थ है—
(i) एक-दूसरे का सहारा बनना
(ii) एक-दूसरे के लिए बाधा बनना
(iii) एक-दूसरे के काम में विलंब पैदा करना
(iv) खुद अपना सहारा बनना

(ख) जीवन में आगे कैसे बढ़ा जा सकता है?
(i) ईश्वर की दया से
(ii) अपने स्वार्थ को पूरा करके
(iii) एक-दूसरे का सहारा बनकर
(iv) दूसरे का सहारा छीनकर

(ग) 'अमर्त्य अंक' किसे कहा गया है?
(i) ईश्वर की गोद
(ii) माँ की गोद
(iii) पिता की गोद
(iv) मौत की गोद

(घ) कैसे जीने की प्रेरणा दी गई है?
(i) केवल अपने लिए
(ii) केवल दूसरों के लिए
(iii) अपने और सबके लिए
(iv) मृत्यु को भूलकर

उत्तर : (क) *(i) एक-दूसरे का सहारा बनना*
(ख) *(iii) एक-दूसरे का सहारा बनकर*
व्याख्यात्मक हल : एक-दूसरे के हित में ही हमारा हित छुपा हुआ है।
(घ) *(iii) अपने और सबके लिए*
व्याख्यात्मक हल : अपने साथ-साथ सबके हित में सोचना और कार्य करना ही मनुष्य की पहचान है।

वर्णनात्मक प्रश्न

[2 - 5 अंक]

लघु उत्तरीय प्रश्न (25 – 30 शब्द)

[2 अंक]

6. 'मनुष्यता' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि पशु प्रवृत्ति किसे कहा गया है और मनुष्य किसे माना है? [CBSE 2013, 11]

उत्तर : पशु प्रवृत्ति का शाब्दिक अर्थ है—पशुओं जैसा स्वभाव। प्रस्तुत कविता में पशु प्रवृत्ति मनुष्य के उस व्यवहार को कहा है जब वह केवल अपने बारे में सोचता है। अपना पेट भरना, खाना- सोना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लेता है। पशु-पक्षियों की अपेक्षा बौद्धिक क्षमताएँ अधिक होने पर भी यदि वह सबके हिताहित कार्य नहीं करता तो मानो वह पशु प्रवृत्ति में ही जीवन व्यतीत कर रहा है।

7. कवि मैथिलीशरण गुप्त ने गर्व रहित जीवन बिताने के लिए क्या तर्क दिए हैं? [CBSE 2015]

उत्तर : कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' ने इस बात पर जोर दिया है कि हमें गर्व रहित जीवन जीना चाहिए। हमें धनजैसी छोटी चीज के नशे में अंधा नहीं हो जाना चाहिए। अपने आप को सनाथ पाकर भी अपने पर घमंड करना व्यर्थ है क्योंकि अनाथ संसार में कोई है ही नहीं। तीनों लोकों के स्वामी, परमपिता परमेश्वर का सहारा सभी के साथ है। उनके होते हुए कोई भी अकेला या बेसहारा हो ही नहीं सकता। इसलिए किसी भी बात पर अभिमान करना हमारी मूर्खता है।

8. इतिहास में कैसे व्यक्तियों की चर्चा होती है और क्यों? 'मनुष्यता' कविता के आधार पर लिखिए। [CBSE 2013]

उत्तर : मनुष्य रूप में जन्म लेकर जो लोग सभी के भले के बारे में सोचते हैं, किसी को कष्ट पहुँचाना बुरा समझते हैं, दूसरों की मदद के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हो जाते हैं; इतिहास में ऐसे ही लोगों की चर्चा होती है। ऋषि दधीचि, राजा रंतिदेव, राजा क्षितीश और दानवीर कर्ण कुछ ऐसे ही महान लोगों के उदाहरण हैं जिन्होंने अपने नश्वर शरीर को सभी के हित में प्रयोग करने में कभी संकोच नहीं किया।

9. 'मनुष्यता' कविता में जीवन को सार्थक बनाने के लिए किस बात पर जोर दिया गया है? [Diksha]

उत्तर : कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता के अंतर्गत हमारे समक्ष वह महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किए हैं जो हमें अपने जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा देते हैं। कवि ने पशु प्रवृत्ति से ऊपर उठकर महान जीवन जीने, उदारता को अपनाने, दानवीर बनने और सहानुभूति का महान गुण

अपने अंदर विकसित करने पर जोर दिया है। इन मानवीय गुणों के सहारे ही हम अपने मनुष्य जीवन को सफल बना सकते हैं।

10. **'मनुष्यता' कविता में वर्णित नैतिक मूल्यों का वर्णन कीजिए।**

11. **महात्मा बुद्ध का विरुद्धवाद क्या है?**

उत्तर : महात्मा बुद्ध ने जब अवतार लिया था तब हमारा भारतीय समाज अनेक संकीर्ण मान्यताओं से घिरा हुआ था। महात्मा बुद्ध ने तत्कालीन समाज विरोधी मान्यताओं का विरोध किया और दया, करुणा, परोपकार जैसे महान मूल्यों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सभी को उन्हें अपनाने का संदेश दिया। बुद्ध के यही विचार समाज के लिए विरुद्धवाद थे। समाज के कुछ तत्वों द्वारा किया गया उनका विरोध ही विरुद्धवाद था पर वह उनकी दया और करुणा के आगे टिक नहीं सका।

12. **धरती और महात्मा बुद्ध के उदाहरण किस संदर्भ में दिए गए हैं?**

उत्तर : कवि ने अनेक मानवीय गुणों को मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक बताया है। जिनमें से सहानुभूति और परोपकार का गुण प्रमुख है। धरती इतनी विशाल होते हुए भी सबकी जरूरतें पूरी करने के लिए वशीकृता बनी हुई है। उससे हमें सहानुभूति की सीख लेनी चाहिए और महात्मा बुद्ध ने जिस प्रकार अपनी दया और करुणा से तत्कालीन समाज के विरोध को मिटा दिया, उनसे हमें करुणा और परोपकार की सीख मिलती है।

13. **पशु प्रवृत्ति से आप क्या समझते हैं? कविता में इसका जिक्र क्यों किया गया है?**

उत्तर : मनुष्य तथा अन्य जीव धारियों में मुख्य अंतर यह है कि मनुष्य की सोचने-समझने और निर्णय लेने की शक्ति अधिक प्रबल होती है। इसके बल पर वह अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर संपूर्ण समाज और विश्व के हित-अहित का ख्याल कर सकता है। यदि मनुष्य रूप में जन्म लेकर भी वह सबके काम नहीं आ सकता तो यह पशु प्रवृत्ति ही है।

14. **घमंड करना मनुष्य जीवन की सफलता में कैसे बाधा बन सकता है? स्पष्ट कीजिए।**

15. **कविता में ईश्वर के प्रति कवि का विश्वास कैसे झलक रहा है?**

उत्तर : कवि ने किसी भी परिस्थिति में धैर्य न खोने की और घमंड के नशे में चूर होने से बचने की सलाह दी है क्योंकि उनका विश्वास है कि ईश्वर सब जगह और सबके साथ है। उनका सहारा सभी को मिला हुआ है। उनके होते हुए कोई भी अकेला या बेसहारा नहीं हो सकता। वह संपूर्ण प्रकृति के रूप में हमारी सहायता के लिए अपनी बड़ी-बड़ी बाँहें फैलाए खड़े हैं। यदि उनके होते हुए भी कोई अपने आपको बेसहारा महसूस करता है तो वह अत्यधिक भाग्यहीन है।

16. **कविता में कवि ने मनुष्य जीवन के महत्वपूर्ण उद्देश्य की व्याख्या करते हुए क्या कहा है?**

उत्तर : कवि ने कहा है कि आपसी सहयोग से उन्नति की ओर बढ़ना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। यदि हम केवल स्वार्थपूर्ण होकर अपने ही बारे में सोचेंगे, तो देश और समाज उन्नति नहीं कर पाएगा। इसी कारण कवि गुप्त जी ने परोपकार को जीवन का उद्देश्य और सहानुभूति को महाविभूति कहा है। उनकी दृष्टि में जो सारे संसार को अपने जैसा मानता है अर्थात् सबके प्रति आत्मभाव रखता है, वही संसार में चिरस्मरणीय कहलाता है। कवि ने देश के उन महान मानवों को याद किया है, जिन्होंने औरों के लिए बड़े-बड़े त्याग किए और मनुष्यता को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की। उनकी दृष्टि में मनुष्य कहलाने का अधिकारी वही है, जो मानवता के मूल्यों का पालन करता हो।

निबंधात्मक प्रश्न (60-70 / 80-100 शब्द)
[4 एवं 5 अंक]

17. **'मनुष्यता' कविता में कवि ने किन महान व्यक्तियों का उदाहरण दिया है और उनके माध्यम से क्या संदेश देना चाहा है?** **[CBSE 2016]**

उत्तर : कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से मनुष्य जीवन का महत्व और उसका अर्थ तो बताया ही है साथ ही हमें उसे सफल बनाने का मार्ग भी दिखाया है। नैतिक मूल्यों और मानवीय गुणों को अपनाने पर बल देने के लिए कुछ पौराणिक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। राजा रंतिदेव, दधीचि ऋषि, राज क्षितीश और दानवीर कर्ण का उदाहरण देकर हमें दानवीरता के गुण को अपनाने की सीख दी है क्योंकि शरीर जो कि नश्वर है उसके उचित प्रयोग से हमें पीछे नहीं हटना चाहिए और सबके काम आते हुए अपने जीवन, अपनी आत्मा को महान बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। महात्मा बुद्ध का उदाहरण देकर उन्होंने दया, करुणा और परोपकार को सर्वोपरि माना है।

इस प्रकार इतिहास के यह उदाहरण हमारा मार्गदर्शन करने के लिए और अपने मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने की प्रेरणा देने के लिए पर्याप्त हैं।

⚠ एहतियात

➡ *यदि यह प्रश्न दो अंक में आता है तो सभी दानवीरों के नाम और उन्होंने क्या दान किया, उसके बारे में लिखना ही पर्याप्त है। यदि चार अंक में आता है तो सभी के नामों के साथ-साथ उनके द्वारा किए गए महान कार्यों का विस्तृत वर्णन करना अनिवार्य है।*

18. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि ने किन गुणों को अपनाने का संकेत दिया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [CBSE 2015]

उत्तर : धरती पर अनगिनत प्रकार के जीव हैं। उनमें से मनुष्य को ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उसका बुद्धि, बल, उसका विवेक, निर्णय लेने की शक्ति उसे सर्वोपरि बनाती है। कवि का मानना है कि केवल मनुष्य के रूप में जन्म लेने से कोई मनुष्य नहीं कहला सकता। उसके अंदर कुछ मानवीय गुणों का होना आवश्यक है। पशु प्रवृत्ति से ऊपर उठकर उसे सभी की मदद करने, सभी के सुख-दुख में शामिल होने का प्रयास करना चाहिए। उसके अंदर सहानुभूति का गुण होना चाहिए तभी वह अपने साथ-साथ दूसरों के कष्ट दूर करने की कोशिश कर पाएगा। दया, करुणा और परोपकार जैसे गुण ही उसकी आत्मा को महान बना सकते हैं। ईश्वर में विश्वास रखते हुए एक उचित मार्ग पर चलते हुए सबके साथ मेलजोल बनाकर रखना चाहिए। जीवन मार्ग में चाहे कितनी भी विघ्न-बाधाएँ आएँ, साहस से उनका सामना करना चाहिए। इन्हीं सब गुणों से मनुष्य जीवन सार्थक हो सकता है।

19. 'मनुष्यता' कविता का प्रतिपाद्य संक्षेप में लिखिए। [CBSE 2014, 12, 11, Delhi Gov. 2021]

उत्तर : कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता के अंतर्गत मनुष्य जीवन का महत्व, उसका सदुपयोग करने के उपाय तथा उन मानवीय गुणों पर प्रकाश डाला है जो एक मनुष्य जीवन को सार्थक बनाते हैं। कवि के अनुसार स्वार्थ से ऊपर उठकर हमें एक महान जीवन जीना चाहिए। तभी हम सुमृत्यु को प्राप्त कर सकते हैं। हमें उदारता का गुण अपनाना चाहिए। किसी भी प्रकार का दान देने में अर्थात् सहायता करने में संकोच नहीं करना चाहिए। मनुष्य के अंदर सहानुभूति, दया और करुणा का जो भाव है वही उसे अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है। परमपिता परमात्मा पर विश्वास रखते हुए हमें एक-दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ना चाहिए। विवेकपूर्वक एक उचित मार्ग का चुनाव करके जीवन-पथ पर मेलजोल के साथ आगे बढ़ना चाहिए। सभी के हित चिंतन में ही हमारा हित छुपा है। मनुष्य ही वह है जो प्राणीमात्र के लिए अपना जीवन व्यतीत करे।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिन भौतिक वस्तुओं से उसका जीवन चलता है उनके उत्पादन में भी बहुत से लोगों का योगदान होता है। कहीं न कहीं हम सभी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक के हित में सभी का हित समाया है।

20. 'मनुष्यता' कविता में परोपकार के संबंध में दिए गए उदाहरण को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि आपका मित्र परोपकारी है यह आपने कैसे जाना? [CBSE 2020]

उत्तर : कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' ने परोपकार को मनुष्य जीवन का एक महत्वपूर्ण गुण बताया है। परोपकार का अर्थ है- दूसरों का उपकार या भला करना। सभी के दुख-सुख को समझते हुए सभी के हित में कार्य करना। कवि ने परोपकार का महत्व बताने के लिए इतिहास के कुछ दानवीरों के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। राजा रंतिदेव ने अपने हाथ में लिया हुआ भोजन का थाल भी दूसरे की क्षुधा को तृप्त करने के लिए दान कर दिया था। दधीचि ऋषि ने देवताओं का साथ देने के लिए अपनी अस्थियाँ तक दान कर दीं थीं। राजा क्षितीज ने एक पक्षी की जान बचाने के लिए अपने शरीर का मांस दान कर दिया था और वीर कर्ण ने अपना सुरक्षा कवच खुशी-खुशी दान में दे दिया था। इन सब दानवीरों का उद्देश्य दूसरों का हित करना ही था।

मेरा भी एक मित्र है जो किसी को तकलीफ में नहीं देख सकता। चाहे कोई छोटा-सा पक्षी हो या कोई इंसान, अगर वह मुश्किल में है तो मेरा मित्र किसी भी हद तक जाकर उसकी मदद अवश्य करता है। मुझे गर्व है कि मेरा मित्र बहुत ही परोपकारी है।

एहतियात

➡ *किसी भी रूप में किसी की मदद करना परोपकार ही है। वह मदद तन, मन या धन किसी भी माध्यम से हो सकती है।*

21. 'मनुष्यता' कविता में कवि किन-किन मानवीय गुणों का वर्णन करता है? आप इन गुणों को क्यों आवश्यक समझते हैं? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

उत्तर : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज से अलग होकर जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। समाज में रहते हुए उसे अपनी बहुत-सी जिम्मेदारियाँ निभानी होती हैं। अपने व्यवहार में ऐसे गुण विकसित करने होते हैं कि वह सबके साथ मेलजोल रख सके और अच्छे संबंध बना सके। इसके लिए कुछ मानवीय गुण हमारे व्यवहार में होने जरूरी हैं। दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति आदि ऐसी विशेषताएँ हैं जो हमें मनुष्य कहलाने के योग्य बनाती हैं। अपना पेट भरने, खाने, सोने का काम तो पशु-पक्षी भी करते हैं। यदि मनुष्य भी ऐसा ही जीवन जीता है, तो उसमें और अन्य जीवो में कोई अंतर नहीं है। किंतु मनुष्य का बुद्धि-बल अन्य जीवधारियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। उसे अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करते हुए सभी के हित में जीवन व्यतीत करना चाहिए। यही एक सच्चे मनुष्य की पहचान है।

22. 'मनुष्यता' कविता से हमें जीवन की सीख मिलती है। कैसे? 80 से 100 शब्दों में स्पष्ट कीजिए। [CBSE Sample Paper 2020]

23. **'मनुष्यता' कविता में कवि ने सब को एक साथ होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है? इससे समाज को क्या लाभ हो सकता है? स्पष्ट कीजिए।**

[CBSE 2019, 17]

उत्तर : धरती पर विभिन्न प्रकार के जीव विद्यमान हैं। सब अलग-अलग प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जिन्होंने मनुष्य रूप में जन्म लिया है उनके भी जीवन में भिन्नता देखने को मिलती है। किंतु यह भेद केवल बाह्य है। सबके अंदर एक ही आत्मा विद्यमान है। हम सबको जन्म देने वाले परमपिता परमात्मा एक ही हैं और इस दृष्टि से हम सब एक-दूसरे के भाई-बंधु हैं। हमें बिना किसी मतभेद के, जीवन-मार्ग पर मिलजुल कर आगे बढ़ते जाना चाहिए। जो भी विपत्तियाँ, विघ्न-बाधाएँ राह में आएँ, उन्हें हँसते-हँसते स्वीकार करना चाहिए। किसी के मार्ग में रुकावट न बनकर सभी को सहयोग देना चाहिए क्योंकि समाज में रहते हुए यदि हम एक-दूसरे के विरोध में खड़े होंगे तो उसमें सभी का अहित होगा। जबकि एक होकर चलने से, सबको सहयोग देने से सबके साथ-साथ हमारा भी भला ही होगा। एक समाज ही नहीं संपूर्ण विश्व का हर जीव किसी न किसी रूप में एक-दूसरे से जुड़ा है। अत: एक का नुकसान सब का नुकसान है और एक का फायदा सभी का फायदा है। यही भाव रखते हुए हमें एक सार्थक जीवन का निर्वाह करना चाहिए।

24. **'मनुष्यता' कविता और 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ का केंद्रीय भाव एक ही है। सिद्ध कीजिए।**

उत्तर : 'मैथिलीशरण गुप्त' द्वारा रचित कविता 'मनुष्यता' के अंतर्गत उन गुणों की चर्चा की गई है जो हमारे मनुष्य जीवन को सार्थक कर सकते हैं। कवि का मानना है कि केवल मनुष्य के रूप में जन्म लेने से हम मनुष्य नहीं कहला सकते। हमारे अंदर करुणा, दया, परोपकार सहानुभूति जैसे गुणों का होना आवश्यक है। यही संदेश लेखक 'निदा फ़ाज़ली' द्वारा 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के अंतर्गत दिया गया है। लेखक के अनुसार जब हम इन गुणों से वंचित होते हैं तभी हमारे निजी जीवन में और आसपास के वातावरण में इसके दुष्प्रभाव दिखाई देने लगते हैं। आज प्रकृति, अन्य जीव-जंतुओं यहाँ तक कि मानव के प्रति हमारी निष्ठुरता और असंवेदनशीलता का ही परिणाम है कि हम एक-दूसरे से बहुत दूर हो गए हैं, पर्यावरण अत्यधिक प्रदूषित हो गया है। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए प्रकृति या अन्य जीवों को कष्ट पहुँचाना हम बिल्कुल भी बुरा नहीं समझते हैं। यदि हम 'मनुष्यता' कविता के संदेश को ग्रहण कर सकें तो 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में जिस प्राकृतिक असंतुलन और उसके कारणों तथा दुष्परिणामों का वर्णन किया गया है, वह समाप्त हो जाएगा और यह धरती फिर से स्वर्ग का रूप धारण कर लेगी।

एहतियात

➥ *जब किन्हीं दो पाठों पर आधारित प्रश्न आए तो दोनों से संबंधित महत्वपूर्ण अंशों का उल्लेख करते हुए अपनी बात को सिद्ध करना है।*

TOPPER'S CORNER

वर्णनात्मक प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न [2 अंक]

1. 'मनुष्यता' कविता में उदार व्यक्ति की क्या पहचान बताई गई है और उसके लिए क्या भाव व्यक्त किये गए हैं?

उत्तर

'मनुष्यता' कविता में उदार व्यक्ति की यही पहचान बताई गई है कि उसकी सदा सुमृत्यु होती है, वह सबका हितैषी होता है, उसका बखान सरस्वती किताबों के रूप में करती है तथा धरती भी उनके कृतार्थ भाव मानती है। इन व्यक्तियों के लिए कविता में आदर, सहानुभूति, दया, सत्यवादिता, बलिदानी आदि भाव व्यक्त किए गए हैं।

[CBSE Topper 2019]

निबन्धात्मक प्रश्न [5 अंक]

2. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि ने किन गुणों को अपनाने का संकेत दिया तर्क-सहित उत्तर दिजिए।

उत्तर

'मनुष्यता' कविता द्वारा कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त मनुष्य जाति को उनके वास्तविक लक्षण तथा कर्तव्यों का बोध कराते हैं। वे कहते हैं कि [redacted] वास्तव में मनुष्य वह होता है जो मनुष्य के लिए मरता है। मनुष्य को परोपकारी तथा उदार होना चाहिए। स्वार्थ हेतु जीना पशु-प्रवृत्ति है, [redacted] परार्थ हेतु जीना ही मनुष्य की प्रवृत्ति है। विपरीत परिस्थितियों में भी जनहित या जन कल्याण के विषय में सोचना मनुष्यता के लक्षण हैं। मनुष्य जाति के उद्धार हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाला मनुष्य कहलाता है। कर्ण, रंतिदेव, दधीचि, आदि का उदाहरण देकर कवि मनुष्यों को यही संदेश देते हैं कि विश्व में आत्म भाव का फैलाना प्रचार करना अत्यावश्यक है। परस्परावलंब अर्थात् एक दूसरे का सहारा बनकर, सहयोग करना मनुष्य का धर्म है। आखिर सभी मनुष्य बंधु हैं तथा उनकी निर्मिति करने वाले एक ही हैं। अतः कवि उपर्युक्त गुणों को अपनाने का संकेत देकर मनुष्यों को एक सुखी समाज की स्थापना करने का आग्रह करते हैं।

[CBSE Topper 2015]

3. 'मनुष्यता' कविता में कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

उत्तर

कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता में सभा का एक-साथ एकजुट होकर चलने को कहा है क्योंकि एकता में बल होती है। कवि के अनुसार मनुष्य को उदार, करुणावान एवं परोपकारी होना चाहिए। कवि के अनुसार हम सभी एक ही त्रिलोक नाथ के संतान हैं इसलिए हम सभी बंधु हैं। हमें एक

दूसरे के सुख-दुख में साथ रहना चाहिए एवं एक-दूसरे की सहायता करते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। एक साथ चलने पर हम एक-दूसरे के कष्ट को मिटा सकते हैं एवं मार्ग में आने वाले कठिनाइयों का सामना आसानी से कर सकते हैं।

[CBSE Topper 2014]

4. 'कर चले हम फिदा' अथवा 'मनुष्यता' कविता का प्रतिपाद्य लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर मनुष्यता का प्रतिपाद्य।

मनुष्यता!

मनुष्यता अर्थात वह गुण जो एक मानव को सच्चा मनुष्य बनाते हैं। कवि इस कविता के द्वारा एक सच्चे मनुष्य के गुणों का उल्लेख कर रहा है। उसके अनुसार एक सच्चा मनुष्य वही है जो आत्मकेंद्रित न होकर परहित का कल्याण करे। जो लोग स्वार्थी हैं, केवल अपना हित चाहते हैं उनमें मनुष्यता जैसी पवित्र भावना का अंश नहीं है। कवि ने रन्ता रंतिदेव, दधीचि, राजा उशीनर एवं कर्ण जैसे महादानियों का उदाहरण देकर मनुष्यों को वैविध्यक दान करने के लिए प्रेरित किया है। महात्मा बुद्ध के समान स्नेहपूर्वक सारी कुप्रथाओं का अंत करने की ओर संकेत किया है।

एक सच्चा मानव वही है जो सब कुछ पाने के बाद भी घमंड न करे और सर्वदा साथ एवं सच्चाई के पथ पर अडिग रहे। जो अकेले ही नहीं अपितु सबको साथ लेकर चलता है, केवल अपना ही कल्याण नहीं अपितु परार्थ के कल्याण एवं सुख की भी कामना करता है। अपने मन रूपी मन को प्रेम, सद्भावना, सच्चाई एवं दया जैसे गुणों से सींचकर है। एक सच्चा मनुष्य कभी किसी भी विपत्ति में घबराता नहीं। वह परहित के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहता है। वह अपनी ही नहीं सबकी उन्नति का बीड़ा उठाता है। जिस मनुष्य में ये सब मूल्य हैं वही एक सच्चा भला मानस है जिसमें मनुष्यता है पशु-वृत्ति नहीं।

[CBSE Topper 2018]